

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, मसीह का उद्धार कार्य, सत्र 19, नौ घटनाओं का निष्कर्ष

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन मसीह के उद्धार कार्य पर अपनी शिक्षा दे रहे हैं। यह सत्र 19 है, निष्कर्ष, नौ घटनाएँ।

मसीह के कार्य पर हमारे व्याख्यानों को समाप्त करने का समय आ गया है, और यही हम करने की योजना बना रहे हैं।

सबसे पहले, मैं तीन बातें कहना चाहूँगा। सबसे पहले, हमें अपने मन और हृदय में मसीह के व्यक्तित्व और कार्य को एक साथ रखना चाहिए। हमने एक उच्च मसीह-विद्या, यूहन्ना के सुसमाचार, पौलुस के पत्रों, इब्रानियों और प्रकाशितवाक्य के उच्च मसीह-विद्या को ग्रहण किया।

मसीह के कार्य पर इस प्रस्तुति के दौरान, हमने मसीह के व्यक्तित्व के बारे में एक रूढ़िवादी दृष्टिकोण अपनाया। दूसरा, मसीह की उद्धारक घटनाओं पर हमारे ध्यान के प्रकाश में, हम पुष्टि करते हैं कि यह यीशु ही है जो इन घटनाओं के माध्यम से बचाता है। हम मसीह के व्यक्तित्व और कार्य को अलग नहीं करते हैं।

तो, नंबर एक, हम एक उच्च क्राइस्टोलॉजी मानते हैं। यह मसीह के व्यक्तित्व पर एक पाठ्यक्रम होगा जो इसे साबित करेगा, लेकिन हम एक उच्च क्राइस्टोलॉजी मानते हैं। दूसरा, हम मसीह के व्यक्तित्व और कार्य को अलग नहीं करते हैं।

यह कार्य केवल उसी के कारण बचा है जिसने इसे पूरा किया है। वह ईश्वर और मनुष्य है, और ये उसके उद्धार कार्य के लिए दो अत्यंत आवश्यक मानदंड हैं। जैसा कि अवतार पर व्याख्यान में जोर दिया गया था, उसका मनुष्य बनना अपने आप में उद्धार नहीं करता है।

यीशु को अपने लोगों को उनके पापों से बचाने के लिए कई तरह के काम करने पड़े। उच्च मसीह-विद्या, मसीह के व्यक्तित्व और कार्य की अविभाज्यता। तीसरा, क्योंकि मसीह के उद्धारक कार्य को नौ घटनाओं में विभाजित करना उनकी बहुलता पर ध्यान केंद्रित करता है, इसलिए हमें उनकी एकता पर जोर देने की आवश्यकता है।

मसीह का एक उद्धारक कार्य है। इस प्रकार सभी नौ घटनाओं को मसीह की घटना के रूप में देखा जा सकता है। आइए हम मसीह की उद्धारक घटनाओं के बारे में फिर से सोचें।

हम ऐसा तीन आंदोलनों में कर सकते हैं जिनका हमने पहले उल्लेख किया था, लेकिन अब हम और अधिक विस्तार से बताएंगे। पहला स्वर्ग से पृथ्वी की ओर आंदोलन। मसीह के कार्य में पहला आंदोलन उसका स्वर्ग से पृथ्वी पर आना है।

यह आगमन पुराने नियम के थियोफेनीज़ या क्रिस्टोफेनीज़ की तरह ईश्वर का एक अस्थायी रूप से प्रकट होना नहीं है। नहीं, यह इससे कहीं बढ़कर है। ईश्वर के पुत्र का अवतार।

आश्चर्यजनक रूप से, शाश्वत, सर्वशक्तिमान परमेश्वर एक मानव प्राणी बन गया। परमेश्वर पुत्र ने स्वर्ग की महिमा और पिता और पवित्र आत्मा की संगति को छोड़ दिया और अंतिम आदम, दूसरा मनुष्य बन गया। 1 कुरिन्थियों 15, 45 और 47।

परमेश्वर ने हमेशा के लिए सच्ची मानवता को अपने में समाहित कर लिया। अगर हम पूछें कि पुत्र को ऐसा क्यों करना चाहिए, तो शास्त्र में इसका जवाब तैयार है। उद्धारण, परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा, जो स्त्री से जन्मा, व्यवस्था के अधीन जन्मा, ताकि व्यवस्था के अधीन रहने वालों को छुड़ाए, ताकि हम पुत्रों के रूप में गोद लिए जाने का अधिकार प्राप्त कर सकें।

उद्धारण समाप्त, गलातियों 4:4 और 5. परमेश्वर एक बचाव अभियान को पूरा करने के लिए मनुष्य बन गया जो परमेश्वर-मनुष्य की मृत्यु और पुनरुत्थान की ओर ले जाएगा। स्वर्ग से पृथ्वी पर उनके पहले आगमन और स्वर्ग में उनकी वापसी के बीच तीन घटनाएँ घटित होती हैं। उनके अवतार के बाद, हमारे पास ये तीन घटनाएँ हैं: एक पाप रहित जीवन, क्रूस पर चढ़ना और पुनरुत्थान।

अपने अवतार की तरह, मसीह का बेदाग जीवन उसकी उद्धारक मृत्यु और पुनरुत्थान के लिए एक अनिवार्य शर्त है। हालाँकि मसीह, उद्धारण, हर तरह से हमारी तरह परीक्षा में था, उद्धारण बंद करें, महान समाचार यह है कि वह पाप रहित था, इब्रानियों 4:15। वह, जैसा कि परमेश्वर ने यशायाह के माध्यम से कहा, धर्मी था, मेरा सेवक, यशायाह 53:11।

इसने उसे योग्य बनाया जो पाप से अनभिज्ञ था कि वह दूसरों के लिए खुद को दे दे ताकि वे उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन जाएँ, 2 कुरिन्थियों 5:21। परमेश्वर के पुत्र के मुख्य उद्धारक कार्य उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान हैं। पापरहित देहधारी की मृत्यु इन सभी तरीकों से बचाती है।

यह पापियों को परमेश्वर से मिलाता है, उन्हें पाप के बंधन से मुक्त करता है, उनके पापों की सज़ा देता है, उनके शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है, पहले आदम की अवज्ञा को दूर करता है, और अशुद्ध मनुष्यों को शुद्ध करता है। इन सबका मतलब यह है कि यीशु का कार्य हमें हमारे पापों से बचाता है। उसकी मृत्यु को उसके पुनरुत्थान से अलग नहीं किया जाना चाहिए।

अगर मैं एक बात कहना चाहता हूँ, तो वह यही है। उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान मिलकर उसके उद्धारक कार्य का सार, मूल और केंद्र बनते हैं। अगर वह मरा नहीं होता, तो वह जी नहीं सकता था।

और यदि वह नहीं जी उठा होता, तो उसकी मृत्यु से भी उद्धार नहीं होता। उद्धारण, परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो जो हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा विजय प्रदान करता है, उद्धारण बंद करें, शास्त्रों के अनुसार तीसरे दिन मृतकों में से उसे जीवित करके, 1 कुरिन्थियों 15:4 और 57। यीशु का पुनरुत्थान, स्वर्ग से पृथ्वी की ओर इस प्रथम आंदोलन में अंतिम घटना, शैतान,

शैतान के राक्षसों और परमेश्वर के अन्य सभी शत्रुओं पर उसकी शक्तिशाली विजय का संकेत देता है।

अवतार में स्वर्ग से पृथ्वी की ओर तीन आंदोलन, फिर दूसरा, पृथ्वी से स्वर्ग की ओर एक आंदोलन। स्वर्ग से पृथ्वी की ओर पहला आंदोलन मसीह द्वारा स्वर्गारोहण में पृथ्वी से स्वर्ग की ओर जाने के बाद होता है। उन्होंने न केवल ईश्वर-मनुष्य के रूप में अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान में पृथ्वी पर उद्धार प्राप्त किया, बल्कि ईश्वर-मनुष्य के रूप में अपनी मध्यस्थता में स्वर्ग में सेवा करना भी जारी रखा।

स्वर्गारोहण मसीह को सीमित सांसारिक स्तर से पारलौकिक स्वर्गीय स्तर पर ले जाता है। देहधारण ने पुत्र को मांस और रक्त का हिस्सा बनने में सक्षम बनाया, उद्धारण, ताकि मृत्यु के माध्यम से वह शैतान को नष्ट कर सके और अपने लोगों को मुक्ति दिला सके, इब्रानियों 2:14, 15। स्वर्गारोहण यह सुनिश्चित करता है कि जो अभी भी मांस और रक्त का हिस्सा है, वह स्वर्ग चला गया है, उद्धारण, हमारी ओर से एक अग्रदूत के रूप में, इब्रानियों 6:20।

परिणामस्वरूप, उद्धारण, हमारे पास आत्मा का एक सुनिश्चित और दृढ़ लंगर है, एक आशा जो पर्दे के पीछे आंतरिक स्थान में प्रवेश करती है, इब्रानियों 6 की आयत 19। स्वर्ग से महान प्रभु और राजकुमार पश्चाताप और पापों की क्षमा के उपहार प्रदान करते हैं, प्रेरितों के काम 5:31 से उद्धृत। स्वर्गारोहण ने सत्र को सक्षम किया, मसीह उच्च पर महिमा के दाहिने हाथ पर बैठा, इब्रानियों 1:3। वह भविष्यवक्ता, पुजारी और विशेष रूप से राजा के रूप में बैठा। एक स्वर्गीय भविष्यवक्ता के रूप में, वह अपने सेवकों को अपनी आत्मा से सुसज्जित करता है; वह अपने सेवकों को अपनी आत्मा से सुसज्जित करता है ताकि वे अपना वचन फैला सकें और अपने राज्य को आगे बढ़ा सकें।

एक पुजारी के रूप में, वह अपने बलिदान की पूर्णता, पूर्णता और प्रभावकारिता का प्रदर्शन करते हुए बैठ गया, इब्रानियों 10:12। सिंहासनारूढ़ राजा के रूप में, वह अपने पिता के साथ उच्च स्थान पर शासन करता है और उस समय की प्रतीक्षा करता है, उद्धारण, जब उसके शत्रुओं को उसके पैरों के लिए एक पायदान बनाया जाना चाहिए, इब्रानियों 10:13, इब्रानियों 1:13, भजन 110:1 पर निर्भर करता है। पिन्तेकुस्त मसीह का उतना ही उद्धारक कार्य है जितना कि उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान। वह मसीह है, या अभिषिक्त व्यक्ति है क्योंकि उसने अपने बपतिस्मा में आत्मा प्राप्त की ताकि स्वर्गारोहण के बाद, वह चर्च को आत्मा प्रदान करे।

पुराने नियम की भविष्यवाणी की पूर्ति में, महान प्रभु ने अपने चर्च पर पवित्र आत्मा उंडेलकर उसे बपतिस्मा दिया, योएल 2:28 से 32, प्रेरितों के काम 2:17, 18, 33। इस तरह उन्होंने सार्वजनिक रूप से नई वाचा की घोषणा की और नई सृष्टि की शुरुआत की। नौ में से मसीह का एकमात्र चल रहा कार्य, उसकी मध्यस्थता, के दो पहलू हैं।

सबसे पहले, क्रूस पर चढ़ाए जाने, जी उठने और स्वर्गारोहण के रूप में, वह अपने लोगों के लिए समझ और करुणा के साथ प्रार्थना करता है और ज़रूरत के समय मदद करने के लिए उन्हें दया और अनुग्रह प्रदान करता है, रोमियों 8:34, इब्रानियों 4:15, 16। दूसरा, अविनाशी जीवन की

सामर्थ्य के कारण, वह हमेशा के लिए सक्षम है, वह हमेशा के लिए याजक है, और इस प्रकार, जो लोग उसके द्वारा परमेश्वर के निकट आते हैं उन्हें वह पूरी तरह से बचाने में सक्षम है क्योंकि वह हमेशा उनके लिए मध्यस्थता करने के लिए जीवित है, इब्रानियों 7:16 और 7:24, 25। इस तरह, स्वर्ग से पृथ्वी की ओर पहला आंदोलन अवतार में है, उसके बाद उसका बेदाग जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान है।

पृथ्वी से स्वर्ग की ओर दूसरे आंदोलन में स्वर्गारोहण, सत्र, पिन्तेकुस्त और मध्यस्थता शामिल है। स्वर्ग से पृथ्वी की ओर दूसरा आंदोलन है, स्वर्ग से पृथ्वी की ओर, पृथ्वी से स्वर्ग की ओर, और अब तीसरा आंदोलन स्वर्ग से पृथ्वी की ओर दूसरा आंदोलन है। पहला आंदोलन पुत्र के अवतार में स्वर्ग से पृथ्वी की ओर था।

दूसरा आंदोलन मसीह के स्वर्गारोहण में धरती से स्वर्ग की ओर था। तीसरा आंदोलन मसीह के दूसरे आगमन में स्वर्ग से धरती की ओर होगा। पहले आंदोलन में, पुत्र स्वर्ग के एक छोटे से टुकड़े को धरती पर लाया, यानी खुद को।

दूसरे आंदोलन में, मसीह ने धरती का एक छोटा सा टुकड़ा स्वर्ग में लाया, फिर से खुद को, क्योंकि उसका अवतार स्थायी है। तीसरे आंदोलन में, वह स्वर्ग को धरती पर उतारेगा, जैसा कि प्रकाशितवाक्य में बताया गया है। यूहन्ना ने देखा, उद्धृत करें, पवित्र शहर यरूशलेम स्वर्ग से परमेश्वर के पास से धरती पर उतर रहा है, प्रकाशितवाक्य 21:10।

मसीह का दूसरा आगमन उद्धार लाता है। उद्धारण, मसीह, बहुतों के पापों को उठाने के लिए एक बार बलिदान होने के बाद, दूसरी बार प्रकट होगा, पाप से निपटने के लिए नहीं, बल्कि उन लोगों को बचाने के लिए जो उसका बेसब्री से इंतज़ार कर रहे हैं, इब्रानियों 9, 28। लौटता हुआ मसीह मृतकों के पुनरुत्थान, अंतिम न्याय और शाश्वत राज्य की शुरुआत करेगा।

मसीह की उद्धारक घटनाएँ सूचीबद्ध हैं। यहाँ मसीह की नौ उद्धारक घटनाएँ प्रतिनिधि शास्त्र संदर्भों के साथ दी गई हैं। मैं बस प्रत्येक के लिए एक अंश पर संक्षेप में चर्चा करूँगा।

अपने अवतार में, वह हमारे स्थान पर मरने के लिए हम में से एक बन जाता है। इसलिए, लूका 2 और पद 11 में, रात में अपने खेत में चरवाहे इस शानदार रोशनी और एक स्वर्गदूत की उपस्थिति और फिर बोलने से चौंक जाते हैं। लूका 2 के पद 10 में स्वर्गदूत ने कहा, डरो मत, क्योंकि देखो, मैं तुम्हारे लिए बहुत खुशी की खुशखबरी लेकर आया हूँ जो सभी लोगों के लिए होगी।

क्योंकि आज दाऊद के नगर में तुम्हारे लिए एक उद्धारकर्ता जन्मा है, जो मसीह प्रभु है। अवतार उद्धारकर्ता के उद्देश्य से है, जो प्रभु और मसीह है, जिसका वादा किया गया था, अपने लोगों को उनके पापों से बचाता है। दूसरी घटना उसका पाप रहित जीवन है।

2 कुरिन्थियों 5:21 औचित्य की बात करता है, वास्तव में ऐसे संदर्भ में जो मेलमिलाप की बात करता है। और ऐसा करते हुए, यह लूथर द्वारा कहे गए इस शानदार आदान-प्रदान की बात करता है। हमारे लिए, परमेश्वर ने उसे पापी बनाया, और वह पाप से अनभिज्ञ था, ताकि हम उसमें परमेश्वर की धार्मिकता बन सकें।

मसीह वह है जिसने कोई पाप नहीं जाना। उसने कोई पाप नहीं अनुभव किया। उसने कोई पाप नहीं किया।

वह पाप रहित है। और इसी कारण, और उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान के कारण, पिता ने पुत्र को पाप बना दिया। यह रूपकात्मक भाषा है, जिसे कभी-कभी गलत समझा जाता है।

जैसा कि गलातियों 3:13 में है, मसीह हमारे लिए अभिशाप बन गया। इनमें से कोई भी अंश यह नहीं सिखाता कि यीशु एक और इकाई, पाप या अभिशाप बन गया। बल्कि, गलातियों 3 में इसका अर्थ है, मसीह ने वह अभिशाप उठाया जिसके हम हकदार थे और इस तरह हमारे लिए अभिशाप बन गया, ऐसा कहा जा सकता है।

उसने हमारी सज़ा ली। यहाँ, वह ईश्वर मनुष्य होना बंद नहीं कर दिया और पाप कहलाने वाली कोई और चीज़ बन गया। नहीं, हमारा पाप उसके साथ इतना निकटता से जुड़ा हुआ था कि शास्त्र इस तरह से बात कर सकता था।

हमारे लिए, परमेश्वर ने उसे, जो पाप नहीं जानता था, पाप ही बना दिया। वास्तव में, सेंट ऑगस्टीन ने पाप के लिए बलिदान की बात कही थी, और यह संभव है। लेकिन किसी भी मामले में, हमारा पाप परमेश्वर के पुत्र के साथ इतना निकटता से जुड़ा हुआ है कि इस भाषा का उपयोग किया जा सकता है।

लेकिन यह शाब्दिक भाषा नहीं है। हमारा प्रभु शाब्दिक रूप से अभिशाप या पाप नहीं बना। बल्कि, यह एक आदान-प्रदान है, एक धन्य आदान-प्रदान, जैसा कि लूथर ने कहा।

हमारा पाप उसके पास जाता है। उसकी बचाने वाली धार्मिकता, जो परमेश्वर की धार्मिकता है, हमारे आध्यात्मिक बैंक खाते में जाती है, और हम बच जाते हैं। हम परमेश्वर के सामने धर्मी ठहराए जाते हैं।

यह मसीह के प्रायश्चित की दूसरी घटना है, मसीह का उद्धारक कार्य, नंबर एक है, अवतार, नंबर दो, पाप रहित जीवन, नंबर तीन, मृत्यु। मैं सिर्फ गलातियों 3.13 को उद्धृत करूँगा। परमेश्वर ने हमें इस तरह से व्यवस्था के अभिशाप से बचाया। मसीह, क्षमा करें, हमें व्यवस्था के अभिशाप से बचाया।

पॉल ने अभी-अभी कहा था कि जो कोई भी कानून का उल्लंघन करता है वह अभिशाप के अधीन है। हर कोई। कभी-कभी यह कहा जाता है, ओह, यह मार्ग एक राष्ट्रीय इकाई के रूप में इज़राइल से संबंधित है।

नहीं, ऐसा नहीं है। जो कोई भी कानून तोड़ता है, वह अभिशाप के अधीन है। यह निश्चित रूप से व्यक्तियों के बारे में बात कर रहा है, जो एक राष्ट्र बनाते हैं, लेकिन यह व्यक्तियों के बारे में बात कर रहा है।

लेकिन फिर यह कहता है, मसीह ने हमें छुड़ाया। उसने हमें मुक्ति दिलाई। उसने हमें व्यवस्था के उस अभिशाप से बचाया जो हमारे सिर पर मंडरा रहा था।

उसने यह कैसे किया? हमारे लिए अभिशाप बनकर। यीशु ने हमारा अभिशाप ले लिया। यही वह सज़ा है जिसके हकदार कानून तोड़नेवाले हैं।

ताकि हम स्वतंत्र हो सकें, उसने हमें अपने दंडात्मक प्रतिस्थापन प्रायश्चित के द्वारा छुड़ाया। मसीह की मृत्यु को उसके उद्धारक पुनरुत्थान से अविभाज्य रूप से देखा जाना चाहिए।

1 पतरस 1:3, हमारे प्रभु यीशु मसीह के परमेश्वर और पिता का धन्यवाद हो, जिन्होंने हमें आशीर्वाद दिया है। मुझे वहाँ जाना है। मुझे खेद है।

मैं पॉल और पीटर को एक साथ जोड़ रहा हूँ। हमारे प्रभु यीशु मसीह के पिता को धन्य हो, जिन्होंने हमें जीवित आशा के लिए फिर से जन्म दिया है। दया में, उन्होंने मृतकों में से यीशु मसीह के पुनरुत्थान के माध्यम से ऐसा किया।

विश्वासियों के पास अब एक नया जीवन है। यह कैसे हो सकता है? क्योंकि यीशु जीवित है। यदि पिता ने दया में हमें नया जीवन देने की योजना बनाई है, यदि आत्मा वास्तव में आती है और हमें पुनर्जीवित करती है, जैसा कि यूहन्ना 3 सिखाता है, पद 8 में आत्मा से जन्मे हर व्यक्ति के बारे में बात करता है। नए जीवन की शक्ति क्या है? पिता इसका निर्माता है।

आत्मा ही वह वास्तविक एजेंट है जो हमें सशक्त बनाता है। लेकिन शक्ति कहाँ से आती है? पतरस हमें यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने के माध्यम से बताता है। यीशु जीवित है और उसमें निवास करने वाला अनंत जीवन विश्वासियों को तब मिलता है जब आत्मा उन्हें सक्रिय करती है, उन्हें जीवन प्रदान करती है, उन्हें आध्यात्मिक मृत्यु से आध्यात्मिक जीवन की ओर ले जाती है।

और अंतिम दिन, उन्हें मृतकों में से जीवित करके जीवन की पूर्ण नवीनता प्रदान करना। मसीह का स्वर्गारोहण एक उपेक्षित लेकिन फिर भी उद्धारक घटना है। प्रेरितों के काम 5:31 पूछता है, क्या पतरस प्रचार कर रहा है? और वह पश्चाताप और क्षमा के बारे में बोलने में सक्षम है।

वह इस मजबूत विरोधाभास का उपयोग करता है। लड़के, पीटर झाड़ियों के आसपास नहीं घूमता। वह अपने यहूदी दर्शकों से सीधे बात करता है, उन्हें क्रूस पर चढ़ाए जाने के लिए दोषी ठहराता है।

हमारे पूर्वजों के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुमने पेड़ पर लटकाकर मार डाला। वह यहूदी शासक परिषद से बात कर रहा है। तुमने यीशु के बारे में अपना आकलन दिया।

तुमने उसे क्रूस पर चढ़ाया। लेकिन परमेश्वर उसी यीशु के बारे में अपना मूल्यांकन देता है। हमारे पूर्वजों के परमेश्वर, इस्राएल के परमेश्वर ने यीशु को जिलाया, जिसे तुमने पेड़ पर लटकाकर मार डाला।

परमेश्वर ने उसे अपने दाहिने हाथ पर बिठाया, स्वर्गारोहण किया और सत्र को नेता और उद्धारकर्ता के रूप में पुष्टि की। और यहाँ बताया गया है कि स्वर्गारोहित, क्रूसित, पुनर्जीवित व्यक्ति क्या करता है। इस्राएल को पश्चाताप और पापों की क्षमा प्रदान करना।

जो मरा और जी उठा, स्वर्गारोहित हुआ, परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा, और वह राजा के रूप में देता है, वह अपने लोगों को, यहाँ तक कि हर उस व्यक्ति को जो विश्वास करता है, शाही उपहार देता है। मैं हर बार ऐसा करता हूँ जब मैं परमेश्वर की संप्रभुता, परमेश्वर के लोगों, चुने हुए लोगों और उन सभी लोगों के प्रति मानवीय जिम्मेदारी पर जोर देने की कोशिश करता हूँ जो विश्वास करते हैं। यहाँ वे उपहार हैं जो स्वर्गारोहित मसीह प्रदान करता है।

पश्चाताप सुसमाचारीय या उद्धारकारी पश्चाताप है, और यह पापों की क्षमा है। यीशु अपने अवतार, पापरहित जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान, स्वर्गारोहण और, हाँ, अपने सत्र में बचाता है। अहा, एक ऐसा अंश जिस पर हमने वास्तव में गौर नहीं किया है।

कुलुस्सियों 3:1 से 3. ओह, हमने थोड़ा सा किया, मुझे अब याद आया। इसलिए यदि तुम मसीह के साथ जी उठे हो, तो उन चीज़ों की खोज करो जो ऊपर हैं, जहाँ मसीह परमेश्वर के दाहिने हाथ बैठा है। अपना मन उन चीज़ों पर लगाओ जो ऊपर हैं, न कि उन चीज़ों पर जो पृथ्वी पर हैं।

क्योंकि तुम मर चुके हो, अर्थ मसीह के साथ है, और तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। जब मसीह, जो तुम्हारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट होगे। पौलुस इस बात से इनकार नहीं कर रहा है कि विश्वासियों के पास पृथ्वी पर जीवन है।

वास्तव में, कुलुस्सियों के अगले अध्याय में, वह मसीही परिवारों के लिए नियमों के बारे में बात करता है। पहली सदी में पिताओं, माताओं, बच्चों, स्वामियों और दासों को निर्देश देना बहुत ही सांसारिक है, अगर आप चाहें, तो? लेकिन वह चाहता है कि उसके श्रोता और पाठक आज स्वर्गीय सत्य को लें और उन्हें सांसारिक जीवन में लागू करें। देखो, अपनी आँखें यीशु पर टिकाओ, वह कहता है, जो परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा है।

थोड़ी देर में, वह कहता है, तुम्हारा जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है। निहितार्थ, यह भी है कि पुत्र पिता के साथ बैठा है, जिसे वह इफिसियों 2 में स्पष्ट रूप से बताता है। तुम मसीह के साथ बैठ गए हो। और फिर वह कहता है, जब मसीह, जो तुम्हारा जीवन है, प्रकट होगा, तब तुम भी उसके साथ महिमा में प्रकट होगे।

यह अंश मसीह के साथ मृत्यु, उसकी मृत्यु में उसके साथ मिलन को मानता है। ऊपर, 2:20 में वास्तव में उन शब्दों का इस्तेमाल किया गया था। यदि आप मसीह के साथ मर गए, तो अब यह केवल कहता है कि आप कुलुस्सियों 3 की आयत 3 में मर गए, स्पष्ट रूप से इसका अर्थ है, जैसा कि टिप्पणीकार कहते हैं, मसीह के साथ।

यह कहता है कि आप उसके साथ जी उठे हैं, 3:1। यह मानता है कि जब यह कहता है कि आपका जीवन मसीह के साथ परमेश्वर में छिपा हुआ है, तो हम उसके साथ परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठे थे। यह कैसे है? मसीह अभी-अभी बैठे हैं; उन्होंने अभी-अभी यह कहा है। फिर वे कहते हैं, जब मसीह, जो आपका जीवन है, प्रकट होता है, तो यह दूसरी बार आने वाली भाषा है, मसीह का प्रकट होना, तब आप उसके साथ महिमा में प्रकट होंगे।

हम परमेश्वर के पुत्र से इस तरह जुड़े हुए हैं कि हम उसके साथ मरे, उसके साथ दफनाए गए, उसके साथ जी उठे, उसके साथ स्वर्गारोहण किया, उसके साथ बैठे। और रोमियों 8 और यहाँ कुलुस्सियों 3:3 में एक भाव है कि हम उसके साथ फिर से आने वाले हैं। वह भाव क्या है? क्या पौलुस हमारी पहचान को मसीह के साथ भ्रमित कर रहा है? कभी नहीं।

लेकिन वह मसीह के साथ ऐसी एकता की पुष्टि कर रहा है कि उसकी उद्धारक घटनाएँ हमारी घटनाएँ बन जाती हैं। और हम प्रकट होने जा रहे हैं, ऐसा नहीं है कि हम सचमुच फिर से आने वाले हैं, बल्कि यह कि यीशु, जिनसे हम आध्यात्मिक रूप से स्थायी रूप से जुड़े हुए हैं, फिर से आएंगे, और इस तरह हम इस अर्थ में प्रकट होंगे कि तभी जीवित परमेश्वर की बेटियों या बेटों के रूप में हमारी सच्ची पहचान पूरी तरह से प्रकट होगी। अब, शायद हमारे पास हमारे सबसे अच्छे दिनों और क्षणों की झलकियाँ हैं।

फिर दानियेल कहता है, और मत्ती 13 में यीशु कहते हैं, हम सितारों की तरह चमकेंगे, सूरज की तरह। हे भगवान। पिन्तेकुस्त यीशु का उद्धारक कार्य है।

प्रेरितों के काम 1:5 में, वह बपतिस्मा देने वाले यूहन्ना के शब्दों को याद करता है। यीशु ऐसा करता है, और वह कहता है, यूहन्ना ने पानी से बपतिस्मा दिया, लेकिन अब से कुछ ही दिनों में तुम्हें पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया जाएगा। प्रेरितों के काम 2 में उस घटना के बारे में बताया गया है। इस बिंदु पर हमारे लिए महत्वपूर्ण बात यह है कि पिन्तेकुस्त को यीशु की उद्धारकारी घटनाओं में से एक माना जाए।

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान के बिना पिन्तेकुस्त नहीं होता। लेकिन वह मर गया, वह जी उठा, वह ऊपर उठा, वह परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठा, और उसने कलीसिया पर पवित्र आत्मा उंडेलकर योएल और यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले की भविष्यवाणियों और अपनी खुद की भविष्यवाणी को पूरा किया। यह यीशु की उद्धारकारी उपलब्धि थी, जिससे अंततः उसकी सेवकाई का विस्तार उसके सभी अनुयायियों तक हुआ, ताकि वह दुनिया भर में सुसमाचार फैला सके।

वह प्रेरितों के काम, क्षमा करें, रोमियों 8.34 में हमारे लिए मध्यस्थता करता है, कुछ आयतों के बाद जो पवित्र आत्मा के पिता के सामने हमारे लिए मध्यस्थता करने की बात करते हैं क्योंकि वह परमेश्वर की इच्छा जानता है। फिर, जब पौलुस कहता है कि मसीह रोमियों 8.34 में हमारे लिए मध्यस्थता करता है, तो इसका मतलब है कि वह हमारे लिए भी प्रार्थना करता है। यह उसके पुरोहिती कार्य का हिस्सा है, जो कि मुख्य पुरोहिती कार्य है, हमारे स्थान पर मरना।

अतिरिक्त पुरोहिती कार्य जारी है; उसके उद्धार कार्य का एकमात्र जारी पहलू यह है कि वह अपने लोगों के लिए प्रार्थना करता है। और फिर इब्रानियों 7:25 में, जैसा कि हमने देखा, मसीह न केवल हमारे लिए प्रार्थना करता है, बल्कि वह अपने कलंक को धारण करते हुए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट होता है, यह प्रदर्शित करते हुए कि उसने हमसे प्रेम किया और पापों के लिए पूर्ण और अंतिम बलिदान के रूप में स्वयं को हमारे लिए दे दिया। अंत में, उसकी नौवीं उद्धार घटना, जो अभी भी भविष्य है, उसकी वापसी, उसका दूसरा आगमन है।

मुझे 1 पतरस 1:13 बहुत पसंद है, और हमने इस पर इस वीडियो में नहीं देखा। वीडियो पर साथ बिताए ये घंटे। मुझे यह आयत बहुत पसंद है। इसलिए, अपने मन को कार्य के लिए तैयार करें और संयमित रहें। यीशु मसीह के प्रकट होने पर आपको जो अनुग्रह मिलेगा, उस पर पूरी तरह से अपनी आशा रखें।

कुछ साल पहले, सेंट लुइस में जिस स्कूल में मैंने पढ़ाया था, कोवेनेंट थियोलॉजिकल सेमिनरी की 50वीं वर्षगांठ मनाने के लिए आयोजित एक उत्सव में, मैंने ईश्वर की कृपा पर एक लेख लिखा था, जिसमें दिखाया गया था कि कैसे हमने अपनी सोच में ईश्वर की कृपा को कम कर दिया है। उनकी कृपा हमारी समझ से कहीं बड़ी है। यह न केवल उनका आरंभिक प्रेम है जब हम उनके क्रोध के पात्र थे, बल्कि यह एक ईसाई जीवन जीने की उनकी निरंतर शक्ति भी है।

इसीलिए जब पौलुस ईसाई कलीसियाओं और व्यक्तियों को लिखता है, तो वह कहता है, और तुम्हें अनुग्रह मिले, तुम्हें अनुग्रह मिले, और हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से शांति मिले। क्या वह ईसाइयों के उद्धार के लिए प्रार्थना कर रहा है? नहीं। वहाँ जो अनुग्रह है, वह आरंभिक उद्धारक अनुग्रह नहीं है।

यह अनुग्रह को सक्षम बनाता है। यह ईसाई जीवन जीने के लिए परमेश्वर की शक्ति है। हम कभी-कभी परमेश्वर के अनुग्रह को अतीत की बात मानकर उसे कम आंकते हैं।

ओह, यह अतीत की बात है। इफिसियों 2 :8 और 9, क्योंकि अनुग्रह से ही तुम बचाए गए हो। लेकिन यह वर्तमान में भी है।

हम साहसपूर्वक अनुग्रह के सिंहासन के पास आते हैं, इब्रानियों 4, ताकि हम दया प्राप्त कर सकें और ज़रूरत के समय मदद करने के लिए अनुग्रह पा सकें। यह अतीत में नहीं है। ओह, केवल उस पिछले अनुग्रह के कारण ही हम मध्यस्थ से वर्तमान अनुग्रह प्राप्त करते हैं।

लेकिन हमने अनुग्रह को लगभग पूरी तरह से अतीत में सीमित कर दिया है, जबकि यह अतीत है, वर्तमान है। 1 पतरस 1:13 के अनुसार, परमेश्वर का अनुग्रह अभी भी भविष्य में है। अतीत का अनुग्रह, वर्तमान का अनुग्रह और भविष्य का अनुग्रह है।

अपने मन को कार्य के लिए तैयार करें। सतर्क रहें। मसीहियों, जागो और संयमित रहो, वह कहते हैं।

यीशु मसीह के प्रकट होने पर हमें जो अनुग्रह मिलेगा, उस पर अपनी आशा पूरी तरह से टिकाए रखें। मैंने वयस्कों की ईमानदारी की सराहना इतने सालों से की है, जितनी मैं गिन नहीं सकता, लगभग 45 साल। और मैंने अपने छात्रों की ईमानदारी की भी सराहना की है।

कई बार, उनमें से कुछ ने कहा है कि मसीह के दूसरे आगमन के बारे में उनके मन में मिश्रित भावनाएँ हैं। पाप होने की धारणा के कारण, वे स्वीकार करते हैं कि वे अभी भी कभी-कभी पाप करते हैं। मैं इससे सहमत हूँ, मैं आपको आश्वासन देता हूँ।

लेकिन उन्हें डर है कि वे उसके और उसके आने से शर्मिंदा होंगे, 1 यहून्ना क्योंकि उन्हें पाप स्वीकार करने होंगे। और मैं एक मानवीय दृष्टांत का उपयोग करता हूँ। मैं कहता हूँ कि मैं चाहता हूँ कि आप अपने से बड़े व्यक्ति के बारे में सोचें जो आपको दुनिया के किसी भी अन्य व्यक्ति से ज़्यादा प्यार करता है।

और आप अपना जीवन जी रहे हैं, और आपके पिता, या माता, या भाई, या बहन, या महान मित्र आपके दिमाग में आते हैं, और आपको एहसास होता है कि आपने उनके खिलाफ पाप किया है। आपकी पहली प्रतिक्रिया क्या होगी? उनसे दूर भाग जाना क्योंकि आपको शर्म आ रही है? नहीं। आपकी पहली प्रतिक्रिया होगी कि आप फोन पर जाएं, उन्हें ईमेल करें, तुरंत उन्हें मैसेज करें, और किसी तरह तुरंत चीजों को सही करें।

क्यों? क्योंकि यह व्यक्ति आपको बहुत स्वीकार करता है। वह आपसे बिना किसी शर्त के प्यार करता है। वह आपके लिए किसी भी चीज़ से ज़्यादा मायने रखता है।

आपका प्रिय जीवनसाथी आसानी से इस श्रेणी में फिट बैठता है। और आप कबूल करना चाहते हैं। आपको कबूल करने, चीजों को सही करने, उनका सम्मान करने में खुशी होगी।

यदि यीशु के दोबारा आने पर हमें पाप स्वीकार करने पड़ें तो कितना अधिक? क्या हमें ऐसा करने के लिए उत्सुक होना चाहिए? और मैं यह भी नहीं कह रहा हूँ कि हमें उनके दूसरे आगमन के बारे में बहुत अधिक चिंता करनी चाहिए। ऐसा नहीं है। सुनो, अपनी आशा पूरी तरह से उस अनुग्रह पर रखो जो यीशु मसीह के प्रकट होने पर तुम्हें मिलेगा।

अतीत का अनुग्रह अद्भुत है। इसने ही हमें इस मसीही जीवन में प्रवेश दिलाया। वर्तमान अनुग्रह अद्भुत है।

यह परमेश्वर का प्रावधान है। यह हमारी ज़रूरतों के लिए शक्ति है। लेकिन मसीह में भाइयों और बहनों, आपने अभी तक कुछ भी नहीं देखा है।

भविष्य में अनुग्रह इतना अधिक होगा कि हम परमेश्वर के प्रेम और स्वीकृति से भर जाएँगे, सबसे बड़ा आलिंगन जो हमें कभी मिला है, और इसी तरह। हाँ, हमें दूसरे आगमन से डरने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि जो आने वाला है वह वही है जिसने हमसे प्रेम किया और हमारे लिए खुद को दे दिया, जो जीवित है और जो अपने लोगों पर अनुग्रह की ऐसी अधिकता उंडेलेगा। उस समय,

जैसा पहले कभी नहीं देखा गया है, अपनी आशा पूरी तरह से उस अनुग्रह पर रखें जो आपको रहस्योद्घाटन, यीशु मसीह के दूसरे आगमन पर दिया जाएगा।

मसीह को बचाने वाली घटनाएँ संबंधित हैं। इसमें चार मुख्य बिंदु हैं। पहला, सभी नौ घटनाएँ मसीह के एक उद्धार कार्य का गठन करती हैं।

फिर से, व्यवस्थित ताकत ही इसकी कमजोरी है। हम इन चीजों को बेहतर ढंग से समझने के लिए अलग करते हैं, लेकिन बेहतर होगा कि हम उन्हें फिर से एक साथ जोड़ दें। एक यीशु है।

एक ही उद्धार है। एक ही उद्धार कार्य है। दूसरा, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान उसकी उद्धारकारी घटनाएँ हैं।

ठीक है, कृपया, इन व्याख्यानों को सुनने के बाद, यह मत कहिए कि पीटरसन ने मसीह की नौ घटनाओं में से उद्धार को समान रूप से उलझा दिया है। आप ऐसा कैसे कर सकते हैं? सोचिए कि अब मूल, केंद्र, हृदय, आत्मा, सार उसकी मृत्यु और पुनरुत्थान है। तीन।

उनकी मृत्यु और पुनरुत्थान से पहले दो आवश्यक पूर्वपेक्षाएँ हैं, जिन्हें आप अब तक दिल से जानते होंगे, और उनके बाद पाँच आवश्यक परिणाम हैं। सबसे पहले, सभी नौ घटनाएँ प्रभु यीशु मसीह के एक उद्धार कार्य का गठन करती हैं। प्रत्येक घटना अपने आप में महत्वपूर्ण है और उसे उसी रूप में सराहा जाना चाहिए।

फिर भी मसीह के उद्धार कार्य में सभी नौ घटनाएँ शामिल हैं। हमें तब उसके उद्धार के बारे में एक समग्र दृष्टिकोण रखना चाहिए जिसमें उसके अवतार से लेकर उसकी वापसी तक सब कुछ शामिल है। यह सब उसका उद्धार कार्य है, और यह सब एक है।

दूसरा, हालाँकि उद्धार के लिए सभी नौ घटनाएँ ज़रूरी हैं, लेकिन दो मुख्य और अविभाज्य हैं। मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान उसकी उद्धारकारी उपलब्धि का हृदय और आत्मा हैं। कभी-कभी पवित्रशास्त्र दोनों को एक साथ जोड़ देता है।

यूहन्ना 10:17, 18, प्रेरितों के काम 2:22 से 24, रोमियों 4:25, रोमियों 10:9 और 10, 1 कुरिन्थियों 15:3 और 4, 2 कुरिन्थियों 5:15, फिलिप्पियों 3:10, इब्रानियों 1:3, 1 पतरस 1:11। लेकिन आमतौर पर, पवित्रशास्त्र संक्षिप्त रूप से वर्णन करता है और केवल उसकी मृत्यु या उसके पुनरुत्थान का उल्लेख करता है, जो दूसरे को दर्शाता है। तीसरा, यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के लिए दो आवश्यक पूर्व शर्तें हैं: उसका अवतार और उसका पाप रहित जीवन।

उनका अवतार इसलिए ज़रूरी है क्योंकि उन्हें मरने और फिर से जी उठने के लिए मनुष्य बनना पड़ा। उनका प्रायश्चित्त मनुष्यों के लिए इसलिए मायने रखता है क्योंकि यह एक मनुष्य द्वारा ही पूरा किया गया था। वह कभी भी केवल मनुष्य नहीं रहे, बल्कि वे सच्ची मानवता वाले ईश्वर-मनुष्य हैं।

उसका पाप रहित जीवन आवश्यक है क्योंकि इसने उसे दूसरों के लिए मरने के योग्य बनाया। अगर उसने पाप किया होता, तो वह उद्धारकर्ता बनने के लिए अयोग्य हो जाता। चौथा, मसीह की मृत्यु और पुनरुत्थान के बाद पाँच आवश्यक परिणाम हैं।

उनका स्वर्गारोहण, अधिवेशन, आत्मा का भेजा जाना, मध्यस्थता, तथा दूसरा आगमन। उनका स्वर्गारोहण इस मायने में बचाता है कि इसने उन्हें सीमित सांसारिक क्षेत्र से पारलौकिक स्वर्गीय क्षेत्र में पहुँचाया ताकि वे हमारे लिए परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट हो सकें। उनका अधिवेशन इस मायने में बचाता है कि वे परमेश्वर के दाहिने हाथ पर बैठते हैं। वे ऊपर से शासन करते हैं तथा बचाते हैं।

पिन्तेकुस्त के दिन उसका कार्य हमें बचाता है क्योंकि उसने, अभिषिक्त जन ने, परमेश्वर के राज्य का विस्तार करने के लिए कलीसिया पर आत्मा उंडेली। उसकी मध्यस्थता हमें बचाती है क्योंकि वह निरंतर परमेश्वर की उपस्थिति में अपना बलिदान प्रस्तुत करता है और संतों के लिए प्रार्थना करता है। उसका दूसरा आगमन हमें बचाता है क्योंकि वह अपने शत्रुओं को परास्त करने और अपने लोगों को अंतिम उद्धार दिलाने के लिए महान महिमा और शक्ति के साथ फिर से आएगा।

मसीह के उद्धार कार्य की बाइबल आधारित तस्वीरें। मसीह के प्रायश्चित के महत्व को समझने में हमारी मदद करने के लिए पवित्रशास्त्र में छह मुख्य तस्वीरें दी गई हैं। यहाँ हम सभी छह तस्वीरों को एक साथ देखते हैं।

चित्रों का सारांश। मेल-मिलाप का चित्र पारस्परिक संबंधों के क्षेत्र से आता है। अलगाव या संबंधों में व्यवधान के कारण हमें ईश्वर से मेल-मिलाप करने की आवश्यकता है।

मसीह को शांतिदूत के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा ईश्वर को मानव से और मानव को ईश्वर से मिलाता है। इसका परिणाम ईश्वर और हमारे बीच शांति है। मुक्ति का विषय स्वामी-दास संबंध के क्षेत्र से आता है।

हमें छुटकारा पाने की ज़रूरत है क्योंकि हम पाप और शैतान के बंधन में हैं। मसीह को एक उद्धारक के रूप में चित्रित किया गया है जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हमें आध्यात्मिक दासता से मुक्त करता है। परिणामस्वरूप, हम परमेश्वर के पुत्रों या पुत्रियों की स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं।

कानूनी प्रतिस्थापन की तस्वीर कानून के क्षेत्र से आती है। आदम के मूल पाप और हमारे अपने वास्तविक पापों के कारण हमें न्यायोचित ठहराया जाना चाहिए। मसीह को हमारे कानूनी प्रतिस्थापन के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर को प्रसन्न करता है और हमारे पापों का दंड चुकाता है।

इसका परिणाम यह है कि पवित्र और न्यायी परमेश्वर उन सभी को धर्मी घोषित करता है जो यीशु पर भरोसा करते हैं। मसीह के विजेता होने का विषय युद्ध के क्षेत्र से आता है। हमें छुटकारा पाने की आवश्यकता है क्योंकि हमारे आध्यात्मिक शत्रु हमसे कहीं अधिक शक्तिशाली हैं।

मसीह को हमारे चैंपियन के रूप में चित्रित किया गया है, जो अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा हमारे शत्रुओं को पराजित करता है। परिणामस्वरूप, ईसाई जीवन में वास्तविक विजय होती है। पुनर्निर्माण का चित्र सृष्टि के क्षेत्र से आता है।

हमें पुनर्स्थापित होने की आवश्यकता है क्योंकि आदम के पतन ने मानवजाति की दुनिया में पाप, मृत्यु और अव्यवस्था ला दी। मसीह को दूसरे आदम के रूप में चित्रित किया गया है, जो मृत्यु और पुनरुत्थान तक अपनी आज्ञाकारिता के द्वारा, आदम के पाप के प्रभावों को उलट देता है। इसका परिणाम हमारी खोई हुई महिमा और प्रभुत्व की बहाली है।

बलिदान का विषय उपासना के क्षेत्र से आता है। हमें शुद्ध होने की आवश्यकता है क्योंकि हम अपने पाप से अशुद्ध हैं। मसीह को महान महायाजक के रूप में चित्रित किया गया है जो खुद को बलिदान के रूप में पेश करता है और हमेशा के लिए जीवित रहता है।

परिणामस्वरूप, विश्वासी शुद्ध हो जाते हैं। चित्र एक ही वास्तविकता को दर्शाते हैं। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि छह चित्र छह अलग-अलग वास्तविकताओं की बात नहीं करते हैं।

बल्कि, एक ही वास्तविकता, मसीह द्वारा प्राप्त उद्धार के बारे में बात करने के छह अलग-अलग तरीके हैं। तो फिर, शास्त्र छह प्रमुख चित्र क्यों प्रस्तुत करता है? इसका उत्तर, जैसा कि लियोन मॉरिस ने वर्षों पहले सुझाया था, बाइबल में पाप के चित्रण में निहित प्रतीत होता है। उद्धार की छवियों की बहुलता पाप की छवियों की बहुलता के अनुरूप है।

लियोन मॉरिस, द क्रॉस इन द न्यू टेस्टामेंट, पृष्ठ 395। हमारी दुर्दशा के बारे में बोलने के कई तरीके उन कई तरीकों से मेल खाते हैं जिनसे परमेश्वर अपनी कृपा से हमारी सहायता के लिए आता है। पाप परमेश्वर के लिए इतना घृणित है कि वह इसे कई तरीकों से चित्रित करता है।

जैसा कि प्रत्येक चित्र की आवश्यकता पर चर्चा, जो हम पहले ही कर चुके हैं, दिखाती है। प्रत्येक आवश्यकता, पाप का वर्णन करने का प्रत्येक तरीका, मसीह के कार्य में पाप को पलटने के परमेश्वर के तरीके से मेल खाता है। इसलिए, परमेश्वर मसीह के मेल-मिलाप के साथ अलगाव के रूप में पाप को पलट देता है।

वह मसीह के छुटकारे के साथ बंधन पर विजय प्राप्त करता है। वह मसीह के प्रायश्चित के साथ अपराध को दूर करता है। वह एक शक्तिशाली विजेता की जीत के साथ हमारे शक्तिशाली दुश्मनों पर विजय प्राप्त करता है।

वह आदम की अवज्ञा को दूसरे आदम की आज्ञाकारिता से पलट देता है। वह मसीह के शुद्ध करने वाले लहू से हमारी आत्मिक अशुद्धता पर विजय प्राप्त करता है। लेकिन यहाँ मुख्य बात यह है कि ये एक ही सत्य को संप्रेषित करने के कई तरीके हैं।

यीशु अपनी मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से पापियों को बचाता है। हमारे अगले और अंतिम व्याख्यान में, हम अन्य चित्रों के लिए एक आधार के रूप में दंडात्मक प्रतिस्थापन पर ध्यान केंद्रित करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट पीटरसन द्वारा मसीह के उद्धार कार्य पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 19, निष्कर्ष, नौ घटनाएँ हैं।